पण्डित श्रीराम दवे का संस्कृत खण्डकाव्यों का स्वरूप, उद्‌भव व विकास

डॉ. अवधेश कुमार मिश्र
व्याख्याता, संस्कृत
राजकीय विठ्‌लनाथ सदाशिव पाठक आचार्य
संस्कृत महाविद्यालय, कोटा (राज.)

शोध सारांश –

यद्यपि परिवर्तन प्रकृति की नियति होती है तथापि प्राच्य और पाश्चात्य का समन्वय अपेक्षित होता है। मूल्यों के उनमूलन से मानवता का ह्रास कवि का चिन्तनीय विषय है। इस प्रकार निज भाषा और निज संस्कृति की निष्ठा, के परम पक्षधर समीक्ष्य कवि पं. दवे के समग्र साहित्य के अनुशीलन से हमें एक तथ्य तो भली–भांति स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान व भावी पीढ़ी को दिशा और दशा का बोध कराने के उद्देश्य से ही काव्यों की रचना की है।

साम्प्रतिकी व्यवस्था से खिन्न कवि की पीड़ा उनके खण्डकाव्यों में सर्वाधिक झलकती है। युवा भौतिकता के दलदल में फंसते जा रहे है। भोगवादी संस्कृति उन पर हावी हो रही है। सम्बन्धों में सुचिता का अभाव दिख रहा है। प्रकृति का दोहन किया जा रहा है। इस प्रकार के चिन्तन से भारतीय दृष्टि से भारत और भारती को देखने के लिए, स्वतः शोध के भाव मन में जागृत हुये, जो प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मूर्तरुप में विद्यमान है।

पं. श्रीराम दवे कृत खण्डकाव्यों का समीक्षात्मक अध्ययन के पीछे शोधार्थी का उद्देश्य भी यही था, कि कवि के युग् बोधक चिन्तन को पाठकों के समक्ष लाया जाय। कवि के शिल्प विधान से अध्येताओं को परिचित कराया जाय। इस प्रकार अनुसंधेय कवि के मौलिक एवं अनुदित खण्डकाव्यों का अध्ययन करते हुये पाश्चात्य शिक्षा संस्कृति से प्रभावित युवा वर्गों में भारतीय सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों की पुनः स्थापना का प्रयास तथा कवि के अव्यक्त भावों को मुखरित करने का प्रयास मात्र है।

कूट शब्द – पौराणिक, श्यावाश्य , गीतिकाव्य, स्तोत्रकाव्य, स्तुतिकाव्य, लहरीकाव्य।

1. खण्ड काव्य का उद्‌भव और विकास –

हृदय में समाहित सुख–दुःख, राग–द्वेष, आवेग–संवेग आदि भावात्मक अभिव्यक्ति की धरा काव्य को लिखने की प्रेरणा कहाँ से मिली, यह एक गवेषणा का विषय है। इस विषय में विद्वद्‌जन एक मत नहीं है, वे स्वानुभूत तर्कों से काव्योदगम् का पृथक–पृथक स्तर सिद्ध करते है। कुछ वैदिक मत के अनुयायी है, तो कुछ पौराणिक मतावलम्बी है। समग्र चिन्तन पश्चात् खण्डकाव्यों के उद्‌भव के क्रम में स्थूल रुप से तीन उपाबन्धों को देख सकते है –

1. वैदिक मत
2. चीनदेशीय मत
3. पौराणिक मत

1. वैदिक मत –

भारतीय विद्वान समस्त ज्ञान–विज्ञान का आगार वेद को ही मानते है। वेद में ही **कवि**[36] शब्द का प्रथम दर्शन होता है। अतः कवेः कर्म काव्य का भी उद्‌गम स्थल वेद को ही कहा जा सकता है। काव्य का ही एक भेद खण्डकाव्य है, जिसे काव्यशास्त्रियों ने अनेक नामों से अभिहित किया है। जैसे गीतिकाव्य, स्तोत्रकाव्य, लहरीकाव्य, सन्देशकाव्य, अन्यापदेशकाव्य, नीतिकाव्य, रागकाव्य, संधातकाव्य आदि आदि।

उक्त सभी काव्यों के उद्‌गम का सूत्र वेदादि ग्रन्थों में मिल जाता है। अतः विविध नामधेया उक्त खण्डकाव्यों की प्रेरणा का बीज ऋग्वेद आदि वेदों में ही खोजे जा सकते है। गीतिकाव्य की श्रुति वैदिक ऋचाओं में दृष्टिगत होती है, क्योंकि वैदिक कवि या ऋषि प्रायः गायक थे। उन्होंने अपने आराध्य देवों को गा–गाकर प्रसन्न करने की रीति प्रवर्तित की। देवप्रिय गायन को उन्होंने यज्ञरुप में स्वीकार किया और अपने गान को स्तुति साम आदि नाम दिया। जैमिनी सूत्र के अनुसार 'गीति ही साम'[37] है।

वैदिक आर्य अपने आराध्य देव को सम्बोधित करके उनके प्रति अपने ह्रदय के भावों को गीतों में उडेल देते थे। ऋग्वेद के सर्वोत्तम गीत भावुकता की दृष्टि से उषा विषयक है, जो दृष्ट्‌व्य है –

'उषो देव्यर्मत्याविमाहि,
चन्द्ररथा सुनृता ईरयान्ती।
आत्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा,
हिरण्यवर्णा पृथुपाजसो यो'।।[38]

कवि सुन्दर पदार्थ के दर्शन में जब तक अपनी पृथक सत्ता का विसर्जन कर उसमें तादात्म स्थापित नहीं कर लेता, तब तक वह भावमयी कविता की सृष्टि नहीं कर सकता। वेद के महनीय मन्त्र दर्शन तथा वर्णन से स्निग्ध ऋषि की वाणी के भव्य उदाहरण है। इसमें उषा के मन्त्र काव्य की दृष्टि से नितान्त सरस, सहज तथा भव्य भावना से अभिमण्डित है। उषा को देखकर प्रत्येक भावुक के ह्रदय में कोमल भावना का उदय होता है। उषा मानवी के रुप में कवि ह्रदय के नितान्त पास आती है। ह्रदय में कौतुक उत्पन्न करते हुए कवियों को काव्य लेखन की प्रेरणा दे जाती है।

ऋग्वेद के दशमे मण्डल में इन्द्र ने सरमा नामक कुक्करी को असुरों के समीप दूती बनाकर भेजा। कुक्करी और असुरों के प्रश्नोत्तर विभिन्न प्रकार मन्त्रों से प्रदर्शित किये गये है। ऋग्वेद का यह

'सरमापणि' सूक्त मनोरंजक और आकर्षक है, जो पाठकों में हास्य को जन्म देता है। सम्भव है कि कवि की कल्पना के उन्मेष के लिए यह सूक्त आधार रहा हो।

शौनक मुनि द्वारा प्रणीत 'वृहद्‌देवता' के पाँचवे अध्याय के पचासवें श्लोक से लेकर अस्सीवें श्लोक तक एक आख्यान वर्णित है। जिसमें अत्रि के पौत्र **श्यावाश्य** ने अपनी मन्त्र शक्ति की प्रशंसा करते हुए राजर्षि **दार्म्यरथवीति** के पास उसकी सुन्दरी पुत्री के प्रति अपने अनुराग को व्यक्त करने के लिए 'रात्री' को दूत बनाकर भेजा था । मेघदूत आदि खण्डकाव्यों में जड़ पदार्थ को दूत बनाने की प्रेरणा सम्भवतः कालिदास को यहीं से मिली होगी।

सृष्टि के आरम्भ में जब मनुष्यों ने इस धरती पर अपनी आँख खोली होगी, तब प्रकृति के इस अद्‌भुत दृश्यों को देखकर कौतुहल उत्पन्न हुआ होगा। कौतुहलता वश मनुष्यों के हाथ प्रार्थना के लिए सहसा उठे होंगे। फलस्वरुप मुख से स्तुति निकली होगी। इस प्रकार वेदों में स्तोत्र साहित्य के उद्‌गम का बीज प्राप्त होता है। अतः अग्नि, इन्द्र आदि देवों की स्तुति ही खण्डकाव्य की विधा स्तोत्र काव्यों का उद्‌गम स्थल कहा जा सकता है।

2. चीनदेशीय मत –

बंगदेशीय विद्वान 'हरिहर नाथ डे' के अनुसार मेघ को दूत बनाने का श्रेय चीन के कवि **'स्यूकाङ'** को जाता है। सम्भवतः कालिदास को यहीं से यह प्रेरणा मिली हो। वैसे अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक के अन्तिम श्लोक में **'चीनांशुकमिवकेतोः प्रतिवातनीयमानस्य'**[39] के द्वारा चीन निर्मित वस्त्र की ओर संकेत किया है। अतः उस कवि की कल्पना से परिचित होना कोई असम्भव सा नहीं लगता। एतद्‌र्थ दूतकाव्यों के उद्‌भव का बीज उक्त कवि के काव्यों को जाता है।

3. पौराणिक मत –

'ब्रह्मवैवर्त' पुराण की एक कथा के अनुसार यक्षाधिपति कुबेर की हेममाली नामक यक्ष सेवा करता था। कुबेर भगवान शंकर की आराधना करते थे तथा हेममाली को मानसरोवर से पुष्पों को लाने के लिए नियुक्त किये हुए थे। इस सेवक की विशालाक्षी नामक अतीव सुन्दरी नवविवाहिता यक्षिनी पत्नी थी। अतः उसके प्रति अत्यधिक आसक्ति ने हेममाली को कर्त्तव्यच्युत कर दिया। वह समय पर कुबेर के समीप पुष्प न ले जा सका, फलस्वरुप क्रोधित होकर कुबेर ने इसे एक वर्ष तक कुष्टरोग से पीड़ित होने तथा पत्नी वियुक्त होकर रहने का श्राप दे दिया। इस प्रकार '**ब्रह्मवैवर्तपुराण**' की इस कथा से मेघदूत नामक खण्डकाव्य का उद्‌भव विद्वानों द्वारा स्वीकार किया गया है। महाभारत में भगवान कृष्ण का दौत्य कर्म प्रसिद्ध है। भागवत् में उद्धव भगवान कृष्ण के संदेश वाहक के रुप में विख्यात है। महाभारत के नलोपाख्यान में भी हंस का दूत बनना तथा स्वयं राजा नल का पाँचों लोकपालों का सन्देश ले जाकर दमयन्ती तक पहुँचाना भी प्रसिद्ध है। इस प्रकार के अनेक स्थल खण्डकाव्यों की उत्पत्ति का आधार प्रतीत होता है। वाल्मीकि रामायण और महाभारत में अनेक स्थलों पर राम और कृष्ण की स्तुति की गयी

है। गीता के ग्यारहवें अध्याय में भगवान श्री कृष्ण के विराट्रुप की स्तुति की गई है। भागवत् पुराण, विष्णुपुराण, नारदपुराण तथा अन्यपुराणों में उपास्य देवों की स्तुति मिलती है। अतैव कवियों को इन्हीं स्थानों से खण्डकाव्यों के विविधरुप गीतिकाव्य, स्तोत्रकाव्य, स्तुतिकाव्य, लहरीकाव्य, आदि लेखन की प्रेरणा मिली होगी।

वस्तुतः खण्डकाव्य का उद्गम ऋग्वेद से ही हुआ है। ऋग्वेद में उषा, विष्णु, इन्द्र, वरुण, सविता, अदिति और मरुत आदि देवों की अनेक सूक्तों में स्तुति की गई है और उनके गुणों का भाव विह्वलता के साथ वर्णन किया गया है। इन भावों को तथा गुणों को लोक मर्यादा की परिधि में, लौकिक पात्र तथा कथा के रुप में दूतकाव्य, गीतिकाव्य, स्तुतिकाव्य आदि बिखेरे मौक्तिकों को एक सूत्र में पिरोकर सावधान चित्त से खण्डकाव्यों का सृजन हुआ।

लौकिक साहित्य में खण्डाकाव्य परम्परा को स्वतन्त्ररुप से प्रारम्भ करने का श्रेय कालिदास को ही जाता है। खण्डकाव्यों की **विकास–यात्रा** अनवरत अबाधगति से वृद्धि को प्राप्त होती गई, अन्ततः वह काव्य संसार का हार बन गयी । आधुनिक जीवन की व्यस्तता व समयाभाव के कारण आमजन महाकाव्य जैसी दीर्धतम विधा का पठन–पाठन कर जीवन के अवलोकन का समय नहीं निकाल पाते थे। ऐसी स्थिति में खण्डकाव्य विधा देशकाल व परिस्थिति के अनुरुप सहृदय सामाजिकों की साहित्यामृत–पिपासा को तृप्त कर आनन्दित एवं आह्लादित करती रही । अतः महाकाव्य से अधिक रुचिकर खण्डकाव्य ही सामाजिकों को लगने लगी। लौकिक साहित्य का यह खण्ड़काव्य कालिदास की कमनीय लेखनी से प्रसूत होकर अनेकानेक शब्द साधकों की लेखनी का साहचर्य पाकर अद्यतन विकास रथ पर आरुढ़ हो गतिमान है।

मेघदूतम्, ऋतुसंहारम्, गीतगोविन्दम्, भामिनी विलास अमरुशतकम्, भर्तृहरि की शतकत्रयी आदि काव्य खण्डकाव्य का मेरुदण्ड सिद्ध हो रहा है। खण्डकाव्य का अनेक रुप अपने–अपने वैशिष्टियों से अतिविशिष्ट स्थानों पर प्रतिष्ठित है। **गीतिकाव्य** के रुप में वह मधुमय मोहन रुप है तो भक्ति काव्य के रुप में वह भारती का परमरमणीय अंग है। मुक्तक के रुप में वह रसभरे मोदकों के समान है। जिनके आस्वादन मात्र से सहृदयों का हृदय सद्यः परितृप्त हो जाता है। **दूतकाव्य** के रुप में मेघदूत–नेमिदूत–पवनदूत आदि ग्रन्थ विशिष्ट अभ्युदय को प्राप्त होता हुआ प्रकृति की रमणीया छटा के साथ पर्यावरण प्रेम तथा प्रणय संदेशों का मनोहारी स्वरुप प्रस्तुत करता हुआ, अचेतन से चेतन के चित्त का विकास स्थापित करता है। **स्तोत्रकाव्य** के रुप में स्तुति की पराकाष्ठा तथा **लहरीकाव्य** के रुप में भावों के तरंग को तंरगित करता है।

इस प्रकार ऋग्वेद के युग से लेकर आजतक गीतों की रचना का सातत्य सदा रहा है। सामवेद गीतों का ही वेद है। अथर्ववेद में गीत शैली का प्रचूर परिपोषण हुआ है। अथर्ववेद का **'पृथ्वीसूक्त'** सर्वोत्तम गीतिकाव्यों में से है। किन्तु गीतिकाव्यों का विकसित रुप कालिदास के मेघदूत में ही देखने को

मिलता है, जो बीसवीं शताब्दी में रचित खण्डकाव्यों की विकास यात्रा को प्रोन्नत करता है। इस शताब्दी के खण्डकाव्यों में चिन्तन का क्षेत्र बदला है। वह भारतीय द्वीप से निकलकर सम्पूर्ण विश्व की घटनाओं का चिन्तन प्रस्तुत करता है। इस प्रकार निखिल ब्रह्माण्ड की वेदना, सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान–विज्ञान, आविष्कार, युद्ध, प्रेम, राष्ट्रवाद, आतंकवाद, शान्ति, सन्धि आदि–आदि की एक देशीय विषयवस्तु का सत्य चिन्तन सरस शैली में खण्डकाव्यों में समाहित है।

इस प्रकार राष्ट्रीय नवजागरण तथा पुनरुत्थान के प्रभाव से युक्त राष्ट्रवादी काव्यधारा ने खण्डकाव्यों की विकसित श्रृंखला ही निर्मित कर दी है। स्वराज्यम्, राष्ट्रदर्पणम् भारतसंदेशः आदि खण्डकाव्य काव्यमेधा का विकास ही प्रतिभासित होता है। खण्डकाव्य विकास का माला की सुमेरु पं. श्रीराम दवे कृत खण्डकाव्य, जो अनुसन्धेय है। भिन्न–भिन्न विषयों का अधिग्रहण करके आधुनिक ज्वलन्त समस्याओं को खण्डकाव्य की परम्परा में आलोकित किया है।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के वैचारिक क्रान्ति में अग्रिणी भूमिका निभाने वाले क्रान्तदर्शियों ने तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति पश्चात् राष्ट्रीय नवजागरण एवं पुनुरुत्थान की भावात्मक रस धारा प्रवाहित करने वाले आधुनिक काव्यकारों ने अखण्ड भारत के दृश्य खण्ड़ों को आधार बनाकर अपनी प्रतिभा बीज को कल्पना–संवेदना–सद्भावना आदि के आत्मजल से अकुंरित कर, खण्डकाव्य पादप को पल्लवित पुष्पित कर इतना संवर्धित कर दिया है कि काव्यपिपासुओं की पिपासा तृप्ति तथा पुरुषार्थ चुतुष्ट्य प्राप्ति के निमित्त कान्तासम्मित उपदेश दात्री खण्डकाव्यश्रृंखला ही विकसित हो गयी है।

2. निष्कर्ष –

प्राचीन एवं आधुनिक आचार्यों के खण्डकाव्य स्वरुप विषयक चिन्तन पश्चात् निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है कि –

जीवन के एक खण्ड का पद्यात्मक वर्णन खण्डकाव्य है। इसे लघुकाव्य भी कहा जा सकता है। इसमें जीवन के किसी एक पक्ष का वर्णन होता है, किन्तु वह अपने आप में सम्पूर्ण होता है। वैयक्तिक भावों की प्रबलता तथा आत्माभिव्यक्ति की प्रधानता होती है। पात्रों की संख्या प्रायः दो या तीन होती है। महाकाव्य की तरह किसी एक रस की प्रधानता होती है। विशेषतः श्रृंगार–भक्ति और करुण रस की चरमावस्था होती है। अन्तः प्रकृति और बाह्य प्रकृति का सामंजस्य पूर्ण चित्रण होता है। छन्द भावानुकूल एक या एक से अधिक होता है। अलंकार पात्रानुकूल सादृश्यमूलक होता है। भाषा में सरलता होती है तथा भाव में प्रवाह होता है। उदात्त भावों को जागृत करना किसी एक पुरूषार्थ को प्राप्त कराना तथा काल सापेक्ष उपदेश देना खण्डकाव्य का प्रमुख उद्देश्य होता है। इस काव्य में मंगलाचरण आशिंक होता है। श्लोकों की संख्या निश्चित नहीं होती है। काव्य शास्त्रीय मर्यादा की अनिवार्यता भी नहीं होती है।

आधुनिक खण्डकाव्यकारों की दृष्टि आधुनिक परिवेश की भावात्मक व्यवस्था पर केन्द्रित होती है। अतः युग् धर्मानुरुप नवीन जीवन मूल्यों की उपस्थापना तथा युगीन काव्य शिल्प नियामक रुप में

दृष्टिगोचर होता है। जो साहित्य समृद्धि के अनेक सोपान तय करता है। सर्वविदित है कि परिवर्तन को स्वीकार कर समय की धारा में बहने वाला ही विकास के नये आयाम स्थापित कर पाता है। स्वातन्त्रता पश्चात् के खण्डकाव्यकारों ने आम आदमी से जुड़े अनेकानेक विषयों को सृजन सामग्री बनाकर, आम जनों के लिए कमनीय काव्य रुप में प्रस्तुत किया है। फलस्वरुप प्रशंसा वाक्यों से उद्‌गमित खण्डकाव्यों का विकास लोक चेतना तथा युग् बोध के तथ्यात्मक प्रकाश के रुप में प्रत्यक्ष है। निःसन्देह खण्डकाव्यों का स्वरुप विविध नामधेया काव्यरुप बनकर विकास पथ पर रथारुढ़ है, जो भविष्य में सर्वजन प्रिय काव्य विधा का स्थान प्राप्त कर सकेगा।

सन्दर्भ –

1. ऋग्वेद – जैमिनी सूत्र – 3/61/2
2. ऋग्वेद – उषस् सूक्त – 3/61/2
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – 1/35